IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नरेन्द्र कोहली की राम कथा में नवीन उद्‌भावनाएँ

डॉ0 पूनम काजल

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जीन्द

सारांश

महर्षि वाल्मीकि और तुलसीदास ने राम की कथा को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया है; लेकिन आधुनिक युगीन लेखक नरेन्द्र कोहली ने रामकथा को गद्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने रामकथा से सामग्री लेकर 1800 पृष्ठों का 'एक बृहदाकार उपन्यास 'अभ्युदय' लिखा। रामकथा पर आधृत यह उपन्यास–शृंखला सन् 1975 से 1979 ई0 के मध्य प्रकाशित हुई। इन उपन्यासों के नाम दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर तथा युद्ध (दो भाग) थे। सन् 1989 में ये चारों उपन्यास एक रचना के रूप में एकीकृत हो कर 'अभ्युदय' नाम से प्रकाशित हुए। निःसन्देह नरेन्द्र कोहली का यह उपन्यास पौराणिक होते हुए भी यथार्थ की पृष्ठभूमि पर रचित है एवं तर्काश्रित होने के कारण आधुनिकताबोध से ओत–प्रोत है। यह भी सत्य है कि लेखक ने मूल राम कथा के अनेक सन्दर्भों को मानवीय धरातल पर देखने का प्रयास किया है। निःसन्देह लेखक नरेन्द्र कोहली की रामकथा पौराणिक होते हुए भी चिर नवीन है। उनके ये उपन्यास रामकथा पर आधृत होते हुए भी 'रामकथा की पुनर्व्याख्या' है।

इस संदर्भ में डॉ0 विवेकीराय लिखते हैं– " 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' नामक रामकथा शृंखला की कृतियों में कथाकार द्वारा सहस्त्राब्दियों की परम्परा से जनमानस में जमे ईश्वरावतार भाव और भक्तिभाव की जमीन को, उससे जुड़ी धर्म और ईश्वरवाची सांस्कृतिक जमीन को तोड़ा गया है। रामकथा की नई जमीन को नए मानवीय, विश्वसनीय, भौतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आधुनिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ आधुनिक जनवादी अथवा भौतिक दृष्टि का चरमोत्कर्ष है।"[1]

मुख्य शब्द – अभ्युदय, पुनर्व्याख्या, अतिरंजनाओं, शासनाप्रेक्षी

प्रस्तावना

यह नितान्त सत्य है कि आधुनिकयुगीन लेखक कोहली की उपन्यास–शृंखला में राम के जीवन की गाथा को आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। अपने चतुर्दिक परिवेश में व्याप्त मूल्यहीनता, अनास्था व निराशा को दृष्टिगत कर लेखक ने राम के रूप में एक ऐसे कालजयी पात्र का चुनाव किया है, जो भारतीय जनमानस में बसा हुआ है। वस्तुतः रामकथा को आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कर कोहली ने निश्चित रूप से आधुनिक पाठक की तर्कबुद्धि के अनुसार नितान्त नए कलेवर में उसकी प्रस्तुति की है, लेकिन यह भी सत्य है कि उन्होंने कहीं भी रामकथा की पारम्परिक गरिमा को खंडित नहीं होने दिया है। नरेन्द्र कोहली के पुत्र कार्तिकेय कोहली ने अपनी रचना 'नरेन्द्र कोहली के विषय में' इस उपन्यास के सन्दर्भ में लिखा है – "कदाचित् सम्पूर्ण रामकथा को लेकर, किसी भी भाषा में लिखा गया यह प्रथम उपन्यास है। उपन्यास है, इसलिए समकालीन, प्रगतिशील, आधुनिक तथा तर्काश्रित है। इसकी आधारभूत सामग्री भारत की सांस्कृतिक परम्परा से ली गई है। इसलिए इसमें जीवन के उदात्त मूल्यों का चित्रण है, मनुष्य की महानता तथा जीवन की अबाधता का प्रतिपादन है। हिंदी का पाठक जैसे चौंककर, किसी गहरी नींद से जाग उठा। वह अपने संस्कारों और बौद्धिकता के द्वंद्व से मुक्त हुआ। उसे अपने उद्दंड प्रश्नों के उत्तर मिले, शंकाओं का समाधान हुआ। इस कृति का अभूतपूर्व स्वागत हुआ; और हिन्दी उपन्यास की धारा की दिशा ही बदल गई।"[1]

निःसन्देह रामकथा एवं कृष्णकथा भारतीय जनमानस में बहुत गहरे तक पैठी हुई हैं। राम के आदर्श चरित्र ने अनेक लेखकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। यही कारण है कि वाल्मीकि रामायण से प्रेरणा लेकर विपुल साहित्य लिखा गया है। आधुनिक युगीन लेखक नरेन्द्र कोहली ने भी युगीन परिवेश के अनुसार सर्वथा नवीन दृष्टिकोण से अपनी रामकथा की रचना की है। डॉ0 गोपालराय इस सन्दर्भ में लिखते हैं – "सुप्रतिष्ठित कथा और मौलिक उद्भावना को इस प्रकार समंजित करना कि आधुनिक पाठक उसे उपन्यास के रूप में स्वीकार कर सके, साधारण प्रतिभा के बूते की बात नहीं है।"[2]

नरेन्द्र कोहली ने अपनी रामकथा पर आधारित उपन्यास–शृंखला में मूल कथानक के उन प्रसंगों को यथावत रखा है, जिससे मूल कथानक तनिक भी शिथिल न हो। रामकथा को ज्यों–का–त्यों न रखकर लेखक ने नवीन उद्‌भावनाएँ प्रस्तुत करते हुए इन उपन्यासों की सृष्टि की है। यह सत्य है कि परम्परागत प्रसंगों से हटकर कथानक को विस्तार दिया गया है। उन्होंने स्वयं लिखा है– "सिद्धाश्रम की पूरी परिकल्पना पौराणिक एवं रामकथा प्रसंगों से हटकर नवीन रूप में प्रस्तुत की गई है। सुकंठ नक्षत्रा और अनुगता के माध्यम से नवीन कथा प्रसंगों की सृष्टि की गई है।"[3]

लेखक नरेन्द्र कोहली ने अपने रामकथात्मक उपन्यासों में 'अहिल्या–प्रसंग' को युगीन सत्य के रूप में नवीनता के साथ वर्णित किया है। उन्होंने पौराणिक अतिरंजनाओं को छीलकर इस प्रकरण को अत्यन्त विश्वसनीयता और तथ्यात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है। गौतम के माध्यम से आज के बुद्धिजीवियों की शासनाप्रेक्षी अवस्था एवं उसकी सामाजिक क्रांति को उठाने का कथाकार ने भरसक प्रयास किया है। इन्द्र के चरित्र द्वारा सत्ता–सम्पन्न व्यक्तियों के उच्छृंखल चरित्र को उजागर किया गया है। सत्य तो यह है कि अहिल्या के माध्यम से बौद्धिक एवं सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न समाज के बीच शोषित नारी की असहायता को परम्परागत कथा से कुछ अधिक प्रभावी बनाकर उकेरा गया है। इस सन्दर्भ में कार्तिकेय कोहली लिखते हैं– "इस विशाल जंबूद्वीप में हो रहे राक्षसी उत्पात और उसके परिणामस्वरूप सद्‌मूल्यों के हनन और राक्षसी मूल्यों के भयावने आतंक के विस्तार को देखने और उसका प्रतिरोध करने की दीक्षा ऋषि विश्वामित्र ने राम को दी थी। इस कथा के विभिन्न प्रसंगों में से गुजरते हुए लेखक विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं, जन–सामान्य के शोषण, बुद्धिजीवियों के कर्तव्य, समाज में नारी का स्थान, स्त्री–पुरुष सम्बन्ध, जाति और वर्ण की विभीषिकाओं, लोलुप और स्वार्थी बुद्धिजीवियों, शासनाधिकारियों इत्यादि विषयों के सन्दर्भ में अत्यन्त क्रान्तिकारी विश्लेषण करता है; और अपनी मान्यताओं के सहारे एक प्रख्यात कथा को पूर्णतः मौलिक और आधुनिक उपन्यास के रूप में प्रस्तुत कर देता है।"[4]

वाल्मीकि रामायण में दशरथ के चरित्र को माया के वश में रहने वाला दर्शाने के साथ–साथ धर्मपरायण भी बतलाया है, किन्तु इस परम्परा से हटकर नरेन्द्र कोहली ने दशरथ को काम एवं सत्ता के प्रति आसक्त राजनीतिज्ञ के रूप में चित्रित किया है। अपनी इसी इच्छा की पूर्ति हेतु दशरथ कैकेय नरेश को दिए अपने वचन की उपेक्षा कर अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए राम को युवराज पद देने का निर्णय लेते हैं, क्योंकि उन्हें अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए राम सर्वाधिक उपयुक्त दिखाई देते

हैं। राम भली–भाँति जानते हैं कि दशरथ भरत को युवराज बनाने के लिए वचनबद्ध हैं। यही कारण है कि वे अभिषेक के लिए मना कर देते हैं, परन्तु दशरथ युधाजित एवं कैकेयी की अंगरक्षक सेना को हटाकर सामन्तों से परामर्श कर प्रातः ही राम के राज्याभिषेक की घोषणा कर देते हैं।

नरेन्द्र कोहली के रामकथात्मक उपन्यासों में सीता का चरित्र भी परम्परागत सीता से भिन्नता लिए हुए है। सीता शस्त्र विद्या व नौका चालन में निपुण है। निषाद पत्नी से भेंट कर वह नए सांस्कृतिक सम्बन्धों की स्थापना करती है। ये समूची उद्भावनाएँ परम्परागत राम कथा से भिन्न हैं। निश्चित रूप से यह लेखक के मौलिक चिन्तन की देन है।

कोहली के रामकथात्मक उपन्यासों में जटायु का प्रसंग भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। परम्परा से हटकर मानवी रूप में उसको प्रस्तुत किया गया है। उसे एक वृद्ध और राक्षस विरोधी योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है, जो आर्येतर जनजातियों से सम्बन्ध रखता है, जिनमें वानर और गृद्ध आते हैं।

अरण्यकांड के सन्दर्भ को लेखक ने परम्परा से आगे बढ़ाते हुए वर्ग–संघर्ष के रूप में चित्रित किया है। आर्य चेतना के प्रतिनिधि ऋषि शरभंग न्याय, समता और मानवता पर संदह करने लगते हैं। वे आत्मकेन्द्रित होकर सोचते हैं– "उन्होंने गलत व्यक्तियों से आशा लगाकार अपने शिष्यों के मन में गलत व्यक्तियों के प्रति भरोसा जगाया है। इसका दंड उन्हें मिलना ही चाहिए और अन्ततः इस क्षेत्र में होने वाले अत्याचार और अन्याय के प्रति जन सामान्य को जागरूक बनाने के लिए उनको आत्मदाह करना ही होगा।"[5]

शूपर्णखा की योजना और खर की भूमिका को भी कथाकार नरेन्द्र कोहली ने नए रूप में वर्णित किया है। रावण के चरित्र को भी नितान्त नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। कोहली के अनुसार रावण अपनी क्षीण होती राजनैतिक शक्ति को पुनः स्थापित करने हेतु सीता का अपहरण करता है। सीता के अपहरण द्वारा राम को हतोत्साहित कर जनसंगठन को शिथिल कर सीता के उपयोग की कामना में वह उसका अपहरण करता है। सीताहरण के पश्चात् अशोक वाटिका में घटी घटनाएँ भी पारम्परिक रामकथा से भिन्नता लिए हुए हैं।

पारम्परिक रामकथा में हनुमान को राम के सेवक व परम भक्त के रूप में चित्रित किया गया है, लेकिन उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली ने हनुमान के चरित्र में भिन्नता लाते हुए उन्हें एक सामाजिक चिंतक के रूप में चित्रित किया है, जो एक योद्धा भी है। हनुमान का यह चित्रण पूर्णरूपेण परम्परा से हटकर है। इसी प्रकार अशोक वाटिका ध्वंस, लंका दहन, सीता अनुसंधान व हनुमान की पूँछ में आग लगना आदि प्रसंगों को भी अधिक सहजता से प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष

यह सत्य है कि नरेन्द्र कोहली आधुनिक युग के ऐसे लेखक हैं जिन्होंने राम और कृष्ण की पुराकथाओं को नितान्त नए कलेवर में प्रस्तुत किया है। उनकी रामकथा अनेक नवीन उद्भावनाओं से ओत–प्रोत आधुनिकताबोध की सशक्त अभिव्यक्ति करवाने वाली रचना है। इन नवीनताओं से पारम्परिक रामकथा के मूल कथानक में कोई विकृति नहीं आई है। वस्तुतः हम इसे लेखक कोहली का आधुनिक चिंतन कह सकते हैं। उन्होंने अपनी पैनी नज़रों से समाज का जो भी रूप देखा, उसे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने राम के पौराणिक कथानक का आश्रय लिया। उनकी रामकथा निःसन्देह आधुनिक राजनीतिज्ञों की स्वार्थ परता व दायित्वहीनता को उजागर करने के साथ–साथ समाज में स्त्रियों के बढ़ते शोषण व अन्य ज्वलंत सामाजिक मुद्दों को भी प्रस्तुत करती है। आज आतंकवाद के कारण समूचा विश्व जिस भय की स्थिति में जी रहा है, ठीक वैसी ही स्थितियों का चित्रण लेखक कोहली ने अपने 'दीक्षा' उपन्यास में किया है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि लेखक ने पौराणिक प्रसंगों को आधार बनाकर वर्तमान जीवन के यथार्थ की स्पष्ट झलक प्रस्तुत की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उद्धृत, कार्तिकेय कोहली, नरेन्द्र कोहली के विषय में, पृ0 14
2. कार्तिकेय कोहली, नरेन्द्र कोहली के विषय में, पृ0 7
3. उद्धृत, कार्तिकेय कोहली, नरेन्द्र कोहली के विषय में, पृ0 16
4. नरेन्द्र कोहली, दीक्षा, पृ0 5
5. कार्तिकेय कोहली, नरेन्द्र कोहली के विषय में, पृ0 16
6- नरेन्द्र कोहली, दीक्षा, पृ0 4